वर्ष - 4

अंक - 15

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

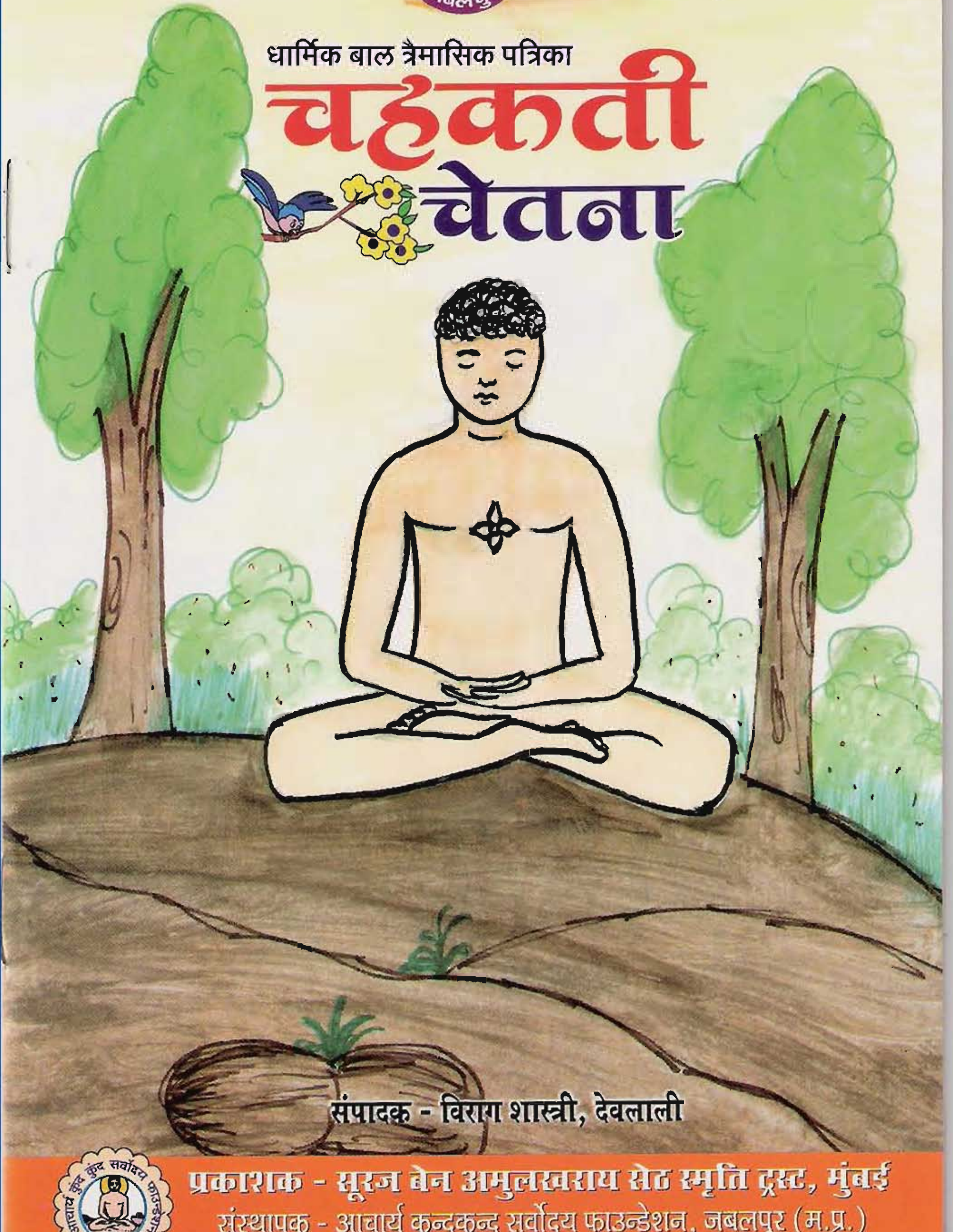

संपादक - विराग शास्त्री, देवलाली

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

पाप

1. पाप क्या कहलाता है ?
   जो दुःख दिलवाता है।
2. पाप कितने होते हैं ?
   पाप पाँच होते हैं ।
3. कौन सा पाप पहला है ?
   हिंसा पाप पहला है।
4. कौन सा पाप दूजा है ?
   झूठ पाप दूजा है।
5. कौन सा पाप तीजा है ?
   चोरी पाप तीसरा है।
6. कौन सा पाप चौथा है ?
   कुशील चौथा पाप है।
7. कौन सा पाप पाँचवा है ?
   परिग्रह पाप पाँचवा है।
8. पाप का क्या फल मिलता है ?
   नरक पशु गति मिलती है।
9. पाप त्याग से क्या मिलता है ?
   स्वर्ग तथा मोक्ष सुख मिलता है।

हमारे तीर्थक्षेत्र

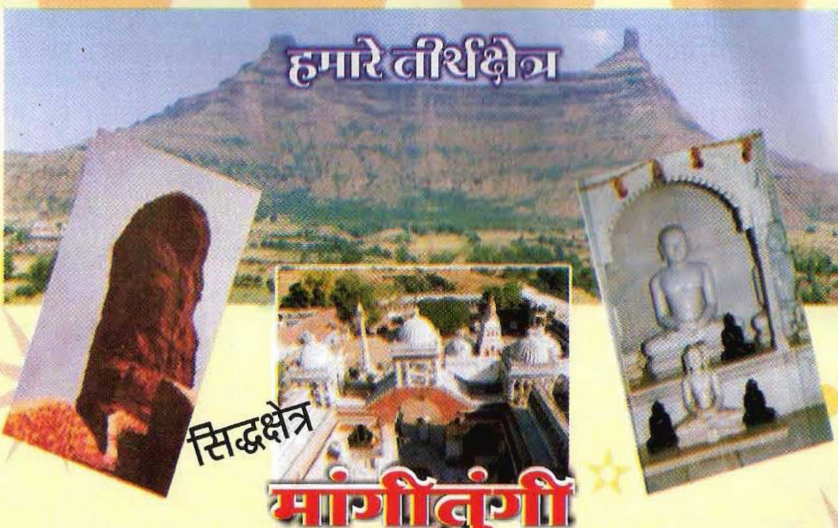

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले की सटाणा तहसील में स्थित है। मांगीतुंगी को दक्षिण भारत का सम्मेदशिखर भी कहा जाता है। यहाँ से राम, हनुमान, सुग्रीव, नील, महानील सहित 99 करोड़ मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त किया। सीताजी ने यहीं पर समाधिमरणपूर्वक देह का त्याग किया और 16 वें स्वर्ग में प्रतीन्द्र का पद प्राप्त किया। मांगी और तुंगी अलग-अलग पर्वतों के नाम हैं। मांगी पर्वत पर 7 मंदिर और तुंगी पर्वत पर 4 मंदिर हैं। नीचे तलहटी में 3 मंदिर हैं इनमें 75 प्रतिमायें हैं।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से गजपंथा सिद्धक्षेत्र 125 किमी, महुवा 175 किमी, एलोरा 180 किमी की दूरी पर स्थित हैं। इस क्षेत्र पर आवास एवं भोजन की पर्याप्त सुविधायें हैं।

मांगीतुंगी संपर्क सूत्र - 02555.242519, 242546, 286531

दिनचर्या

बिना जगाये जल्दी उठना, णमोकार जप प्रभु को जपना।
चरण बड़े जन के फिर छू लो, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलो।।
फिर मंजन कर आप नहाओ, जिनपूजन को मंदिर जाओ।
पीकर दूध पढ़ो गुण पाओ, भोजन कर विद्यालय जाओ।
वापस आकर भोजन करना, बाद में मनोरंजन कुछ करना।
प्रतिदिन पाठशाला का जाओ, सबके चरण छुओ गुण पाओ।।
प्रभु दर्शन कर लौटो भाई, घर पर रहकर करो पढ़ाई।
मानो बड़े जनों का कहना, खुश रहकर नित आदर करना।
आलस तजकर मेहनत करना, अपना काम स्वयं सब करना।
णमोकार को जपकर सोओ, सुव्रत धार समय ना खोओ।

– श्री सुव्रतसागरजी

जन नेता

रक्त रंजित कांति के पश्चात् लेनिन ने रूस की बागडोर संभाली। उनकी लोकप्रियता से क्षुब्ध होकर उनके शत्रुओं ने उन पर प्राणघातक आक्रमण किया और वह गंभीर रूप से घायल हो गये। अभी वह पूर्ण रूप से स्वस्थ भी नहीं हुए थे कि तभी उन्हें सूचना दी गई कि शत्रुओं ने एक महत्वपूर्ण रेलवे लाईन को बमों से उड़ा दिया है। रेलवे लाईन की मरम्मत किया जाना आवश्यक था। देशवासी बहुत बडी संख्या में बिना वेतन के यह कार्य करने में जुट गए।

इस काम में लेनिन ने भी अन्य लोगों की भांति काम किया। बीमारी के कारण दुर्बल होते हुए भी वह लकड़ी ढोने का कठिन काम करते रहे और अपने साथियों में उत्साह की भावना भरते रहे।

लोगों ने कहा– आप जैसे जन नेता को इतना कठोर श्रम नहीं करना चाहिए और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

लेनिन ने हंसते हुए कहा, जो व्यक्ति इतना तुच्छ कार्य भी न कर सके तब उसे जन नेता कौन कहेगा ?

यह शब्द सुनकर सबने लेनिन के आगे सिर झुका दिया।

छोटा और बड़ा डाकू

एक बार विश्वविजेता बादशाह सिकन्दर के सामने एक डाकू पकड़कर लाया गया। सिकन्दर ने उसे फांसी की सजा सुनाते हुए कहा– ''यदि तुझे कुछ कहना है तो अपनी मौत आने से पहले कुछ कह सकता है।''

डाकू बोला– महाराज ! जो काम आप करते हैं वही मैं करता हूँ। अन्तर केवल इतना है कि मैं छोटा डाकू हूँ और आप संसार के सबसे बड़े डाकू हैं। मैंने तो दस पांच घर ही उजाड़ दिये हैं। अतः मुझे सजा देने के पहले आप अपनी सजा का निर्णय कर लीजिये। बादशाह ने कहा – हम तुमसे खुश हैं और छोड़ना चाहते हैं। डाकू ने कहा– मुझे अपराध की सजा तो अवश्य मिलना चाहिये किन्तु आपके अपराधों का संसार में दण्ड का कोई नियम नहीं है। सिकन्दर यह सुनकर सोचता ही रह गया।

संकलन – श्रीमती श्वेता जैन, कटनी

ब्रेड

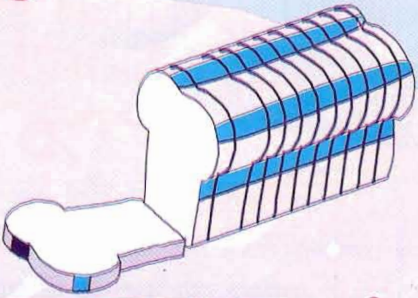

अभक्ष्य भी है और स्वास्थ्य के लिये नुकसानदायक भी

नाश्ते में ब्रेड का प्रयोग होना आम बात हो गई है। अब पावभाजी, पिज्जा, बर्गर के रूप में इसका प्रयोग बढ़ गया है। फास्ट फूड के रूप में आज लोगों की पहली पसंद बनता जा रहा है।

आपको यह मालूम ही होगा कि ब्रेड आटे से बनती है। यह आटा भी पुराना हो जाता है । उसमें अनंत जीव पैदा होजाते है। ब्रेड बनाने के पूर्व आटे में ईस्ट (Yeast) डाला जाता है। दही में जो कीटाणु उत्पन्न होते हैं उसे ईस्ट (Yeast) कहते हैं।

धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से ब्रेड खाना बहुत हानिकारक है। ब्रेड में अधिक मात्रा में पोटेशियम ब्रोमाइट पाया जाता है। ब्रेड बनाने से पहले इस केमिकल को आटे में मिलाया जाता है। जो शरीर में आसानी से नहीं पचता। सेहत के लिये यह केमिकल खतरनाक है। कई देशों में इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगा है। अतः आप स्वयं सोचिये कि ब्रेड खाना उचित है कि नहीं ....।

जहां अहिंसा-वहां सत्य

बादशाह जहागीर ने सुना कि जैन विद्वान् पंडित बनारसीदास जी हमेशा सत्य बोलने हैं होते हैं तथा जैन लोग स्वभाव से अहिंसक तो होती हैं। यह प्रशंसा सुनकर बादशाह ने सोचा कि पंडित बनारसीदास को झूठा प्रमाणित करना चाहिए। सोच विचारकर बादशाह ने इसके लिये एक योजना बनाई और पिंजरे में पली हुई एक जीवित चिड़िया अपने हाथ में लेकर उनसे पूछा- यह चिड़िया मरी हुई है या जिन्दा ? पंडितजी को परिस्थिति समझते देर न लगी। उन्होंने विचार किया कि यदि हम जिन्दा कहते हैं तो बादशाह उसे वहीं पर दबाकर मार डालेंगे और यदि मरी हुई कहते हैं तो अभी उसे छोड़ देंगे और मुझे झूठा साबित कर देंगे। पंडितजी ने कुछ सोचविचार कर कह दिया- हुजुर ! चिड़िया मरी हुई है। बादशाह ने उसी समय अपने हाथ से चिड़िया छोड़ दी, चिड़िया उड़कर दूर जा बैठी।

बादशाह ने कहा- पंडितजी ! मैंने जो सुना था कि आप बड़े सत्यवादी और अहिंसक हैं, आज आपकी सत्यता कहाँ चली गई ? जो साक्षात् जिन्दा चिड़िया को मरी बतलाकर झूठ बोल रहे हो। कविवर पंडित बनारसीदासजी ने उत्तर दिया- जहाँपनाह! यदि मैं जिन्दा बतला देता तो आप उसे फौरन वहीं मसककर मार डालते, जिसमें मुझे उस हत्या का भागीदार होना पड़ता।

यद्यपि अहिंसा और सत्य दोनों धर्म की रक्षा करना चाहिये, किन्तु जब ऐसी परिस्थिति है कि दो में किसी एक का नाश अनिवार्य है, वहां अहिंसा की रक्षा करना हमारा धर्म है।

यह हिंसा पाप ही सबसे भयंकर है और अहिंसा ही धर्म का मूल है, इसीलिये एक प्राणी को बचाने के लिये मैंने जानबूझकर झूठ बोला है।

संकलन – श्रीमती श्रद्धा जैन, कटनी

धूम्रपान से तीन लाभ

विद्यालय के एक छात्र को धूम्रपान करने की आदत थी। एक दिन वह सिगरेट का कस खींच रहा था। इसी बीच उसके शिक्षक ने उसे देख लिया और कहा–''सिगरेट पीते हो, यह तो तुम बहुत अच्छा करते हो'' लड़के की जिज्ञासा बढ़ी। उसने अपने शिक्षक से पूछा महाशय ! वह कैसे ? शिक्षक ने बताया – ''सिगरेट पीने से तीन लाभ हैं 1. सिगरेट पीने वाले के यहां चोरी नहीं होती 2. उसे कुत्ता नहीं काट सकता और 3. वह कभी बूढ़ा नहीं हो सकता'' अब लड़के की जिज्ञासा तीव्र हो उठी। उसने पूछा ''महाशय! यह कैसे हो सकता है'' शिक्षक ने उसे समझाते हुये कहा देखो सिगरेट पीने वालों को फेफड़ों की बीमारी हो जाती है और रात भर खांसता रहेगा, तब उसके यहां चोर कैसे घुस सकता है ?

दूसरा सिगरेट पीने वाला व्यक्ति जल्द ही कमजोर हो जाता है। इसलिऐ उसे छड़ी के सहारे की जरूरत पड़ जाती है तब उसके हाथ में छड़ी होगी, तब उसे कुत्ता कैसे काट सकता है ? और तीसरा सिगरेट पीने वाला व्यक्ति फेफड़े की बीमारी से ग्रस्त होकर जवानी में ही इस संसार को छोडकर चला जाता है अतः बुढापा उसके पास नहीं आता।

अपने शिक्षक की इन बातों को सुनकर लड़के ने अपने शिक्षक के समक्ष शर्मिदा होकर प्रतिज्ञा की कि भविष्य में अब कभी धूम्रपान नहीं करेगा।

– श्रीमती मानसी जैन, जबलपुर

करनी का फल

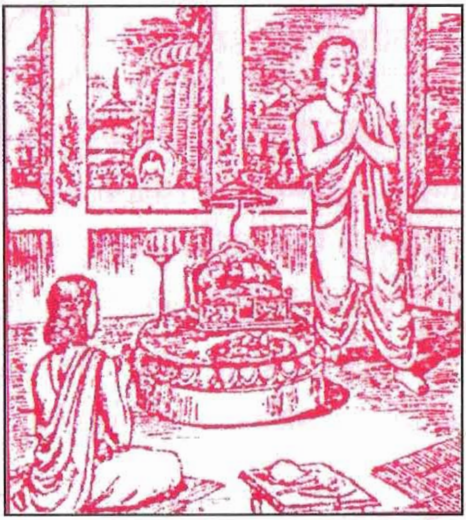

महाराज जयसिंह जंगल में प्यास से तड़फ उठे, प्यास से उनका कंठ सूख जा रहा था। कुछ चले ही थे कि कुछ दूर पर एक झोपड़ी दिखाई दी। झोपड़ी के सामने पहुँच कर उस गरीब किसान से राजा ने पानी माँगा। किसान ने राजा को घड़े का ठंडा पानी पिलाया। पश्चात् दूध और चाँवल की मीठी खीर खिलाई।

राजा को आज का भोजन पानी बड़ा स्वादिष्ट लगा। राजा ने एक कागज में कुछ लिख कर किसान को देते हुए कहा -जब कभी तुम पर कुछ संकट पड़े तो मेरे पास आना। मैं जयपुर में रहता हूँ। इतना कहकर राजा चला गया। किसान ने वह कागज अपनी स्त्री को दे दिया।

कुछ दिन बाद बड़े जो से सूखा पड़ा। अनाज के बिना लोग एक-एक दाने को तरसने लगे। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची थी। ऐसे कठिन समय में किसान की स्त्री ने राजा के वचन की याद दिलाई।

किसान कुछ दिन में जयपुर पहुँच कर वहाँ राजभवन में राजा के सामने भी पहुँच गया। राजा उस समय भगवान की पूजा कर रहा था। बहुत देर तक राजा की क्रिया देखकर किसान कहने लगा - राजन् बार-बार हाथ इकट्ठा करते और फिर जमीन में सिर पटकते हो, इस बीमारी का कुछ इलाज कराओ।

राजा ने समझाया - भाई यह बीमारी नहीं, भगवान से प्रार्थना कर रहा था।

किसलिए ? - किसान ने पूछा।

सुख साधन माँगने के लिय - राजा ने कहा।

तुम भी भीखारी हो, हम तो तुमको राजा समझ रहे थे। अब हम भी भगवान से ही मांग लेंगे। तुमसे क्या मांगे ?

भाई भगवान ही सबको देता है ?

हम मांगेगे तो दे देगा। - किसान बोला।

हाँ भाई किस्मत में होगा तो जरुर देगा।

फिर किस्मत देती है या भगवान ?

इन प्रश्नों की बौछारों में राजा भी सकपका गया। तब किसान ने सम्बोधित करते हुए कहा -

इससे पता चलता है कि फल तो सबको अपनी स्वयं की करनी के अनुसार ही मिलता है क्योंकि यदि भगवान देता होता तो सभी को देता, परंतु वस्तु स्थिति तो यह है कि तो कोई किसी को कुछ न हीं दे सकता, सब स्वयंभू हैं, सब अपनी-अपनी करनी का ही फल पाते हैं।

SMS

1 The IMP qualities of life Confidence : 1 day all villagers decided to pray for rain. All people gathered & only one boy comes with umbrella, that's confiden.

2 Please take note & be careful ... 1. Dont drink APPYFIZZ, it contains cancer causing agents. Dont drink FANTA Apple, it contains Carcinogenic Fat of PIG

भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर प्रणत मौलिमणि प्रभाणा मुद्योतकं दलित पाप तमो वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन पाद युगं युगादौ वालम्बन भवजले पततां जनानाम्।।

Feet, that brighten gems of god's crowns.
By whose light venish all sins,
That are refuge of sinful souls,
worshiping with devotion.

यः संस्तुतः सकल वाड्मय तत्वबोधा, दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुर लोक नाथैः।
स्तोत्रै र्जगत् त्रितय चित्त हरै रूदारैः, स्तोष्ये किलाह मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम ।।

Indre, who's learned in sacred lore,
Has sung in such tunes whose praise,
That enrapture heaven and Earth,
I'll sing praise of Adinath.

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पाद पीठ, स्तोतुं समुद्यत मति र्विगत त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल-संस्थित मिन्दु बिम्ब, मन्यः क इच्छित जनः सहसा ग्रहीतुम् ।।

Thougt unwise, O'god's adored one,
Iwise thee to glorify.
Who but the child wishes to seize,
moo'n reflection in the sea.

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र ! शशाङ्क कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरू प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्त काल पवनोद्धत नक्र चक्रं, को वा तरीतु मल मम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ।।

Even witj, jupiter,s learning
None can praise thee well, O'lord
Ocean, ruffledby doom's day wind,
who is there that can cross.

बच्चों को पाठशाला का रास्ता बताओ

वनस्पति घी

घातक कितना खतरनाक कितना

महँगाई के युग में निर्धन तथा मध्यम परिस्थिति के लोग अपने भोजन में असली (शुद्ध) घी न खाकर वनस्पति घी का इस्तेमाल करते हैं, मिठाई बनवाने वाले घरों में भी अधिकांशतः वनस्पति घी का ही उपयोग करते हैं, क्योंकि कीमत की दृष्टि से यह खाद्य तेलों के भाव में ही उपलब्ध हो जाता है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि वेजिटेबल घी वनस्पति घी तथा डालडा आदि के नामों से प्रचलित पदार्थ क्या है ? कैसे बनता है ? उसके गुण-धर्म क्या हैं ? वस्तुतः इस घी में शुद्ध घी के समान कोई भी लाभकारी गुण नहीं है, यह तो कृत्रिम रीति से उत्पन्न किया गया एक प्रकार का वनस्पति तेल मात्र है, जिसका समाज में जबसे प्रचलन बढ़ा है, तब से विभिन्न प्रकार के रोगों ने जन्म ले लिया है ।

कैसे बनता है यह जहर ?

वनस्पति घी के निर्माण में विविध प्रकार के तेलों का सम्मिश्रण किया जाता है, जिसमें हल्की किस्म के हानिकारक तेलों की मात्रा अधिक तथा मूँगफली एवं तिल के तेल की मात्रा कम रहती है। इस मिश्रण में जीवित प्राणियों को मारकर उनके माँस से निकाली चर्बी मिलायी जाती है, तत्पश्चात् इसकी बदबू दूर करने के लिए उसमें कास्टिक सोडा, निकल धातु का पाउडर हाइड्रोजन गैस तथा स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक अन्य रासायनिक पदार्थ मिलाये जाते हैं। इन रसायनों से यह सफेद घी जैसा रंग तथा गाढ़ापन प्राप्त करता है।

मिश्रित किये हुए तेलों में रासायनिक प्रक्रिया किये जाने से उस

तेल के प्राकृतिक गुण नष्ट हो कर रासायनिक गुण उत्पन्न होते हैं, जो मानव शरीर के लिए अत्यधिक घातक होते हैं।

उत्पादकों द्वारा इस नकली घी के पैकिंग पर तथा टी.वी. और अखबारों में प्रचार के दौरान यह लिखा जाता है कि इस घी में विटामिन ए तथा डी मिला कर इसे अधिक पौष्टिक बनाया गया है, लेकिन ये विटामिन ए तथा डी शार्क या कोड नामक मछली के तेल के रूप में तथा मृत पशुओं की चर्बी मिला कर डाले जाते हैं । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने भी नकली घी के सेवन न करने का अनुरोध प्रजा से किया था। विश्व के अनेक वैज्ञानिक तथा डाक्टर भी समय-समय पर इसके दुष्परिणामों से जनता को अवगत कराते हैं।

अनेक मिलावटखोर व्यापारी अधिक लाभ कमाने की दृष्टि से शुद्ध घी की मिलावट करके जनता को धोखा दे रहे हैं और जनता बड़े मजे से मिलावट वाले इस घी को शुद्ध घी मान कर खा रही है।

शरीर पर दुष्प्रभाव

वनस्पति (वेजीटेबल) घी (नकली घी) खाने से हृदयरोग बढ़ता है तथा रक्त में कोलेस्टेरोल (चिकनाहट) बढ़ जाता है। इससे हाई-ब्लडप्रेशर तथा हृदय-संबंधी विभिन्न रोग पैदा होते हैं, नसों में रक्तप्रवाह क्रिया में अनियमितता आ जाती है।

नकली घी के सेवन से तन्दुरुस्ती बिगडती है, शरीर स्थूल (मोटा) होता है । इसके सेवन से नपुंसकता, अर्धांग लकवा, स्नायु के रोग, अन्धत्व अथवा अल्पायु में ही चश्मे का चढ़ना, अजीर्ण, मूत्र-रोग कब्जियत, किडनी, आयुष्य-क्षय रोग आदि का सामना करना पड़ता है ।

तो आप स्वयं विचार करें कि स्वास्थ्य हानि के साथ पाप बंध करना चाहेंगे ।

कहानी

अभय कुमार की दृढ़ श्रद्धा

राजा श्रेणिक के पुत्र अभयकुमार सच्चे श्रावक थे । वे जिनधर्म का दृढ़ता से पालन करने वाले व्यक्ति थे। सच्चा श्रावक होने से स्वप्न में भी वीतरागी देव के अलावा अन्य देव को नमस्कार नहीं करते थे । एक बार स्वर्ग में सौधर्म इन्द्र ने अपनी सभा में अभयकुमार की बहुत प्रशंसा की। अभयकुमार की प्रशंसा सुनकर ने एक देव ने घमंड में कहा कि यदि इन्द्रराज की आज्ञा हो तो मैं अभयकुमार की दृढ़ता को भंग कर सकता हूँ। ये मध्यलोक वासी थोड़े से संकट में ही घबरा जाते हैं। सौधर्म ने कहा कि यह काम इतना आसान नहीं है। फिर भी तुम्हें जाने की आज्ञा है।

उसी समय एक देव ने अपनी शक्ति से नागदेव का मंदिर बनवाया और नगर में प्रसिद्धि करवा दी कि नगर के बाहर एक नागदेव का मंदिर जमीन से अपने आप प्रगट हुआ है । जो कोई उसकी भक्ति पूजन करता है उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है । यह समाचार सुनकर सारी राजगृही नगरी के लोग उसके दर्शन करने चल पड़े । अभयकुमार को भी समाचार मिला पर वे नहीं गये । मंत्रियों ने बहुत समझाया पर फिर भी वे नहीं गये ।

कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि कि राजसभा में बहुत सारे सर्प भागे चले आ रहे हैं । यह सब देखकर राजगृही की जनता बहुत भयभीत हो गई उन्हें लगा कि अभयकुमार के द्वारा नागदेवता की भक्ति नहीं करने का यह दण्ड है। नागदेव क्रोधित हो गये हैं । लोगों ने फिर अभयकुमार को समझाया। अभयकुमार बोले कि मेरा माथा वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अतिरिक्त किसी अन्य के आगे नहीं झुक सकता । यदि उन सर्पों ने काट लिया तो एक बार मरण होगा परन्तु कुदेव की वंदना करने से अनंत बार जन्म-मरण का कष्ट होगा । इतने में सर्प ने राजा और रानी का काट लिया । परन्तु अभयकुमार ने मस्तक नहीं झुकाया ।

अभयकुमार की अद्‌भुत दृढ़ता देखकर देव ने अपना असली रूप प्रगट कर लिया और अभयकुमार को नमस्कार करके क्षमा मांगी और राजा और रानी की बेहोशी भी समाप्त हो गई ।

बच्चो! इस कहानी से हमें शिक्षा लेनी चाहिये हमें वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अतिरिक्त किसी को नमस्कार नहीं करना चाहिये ।

टीवी का संदेश
चित्रकथा
● खलील खान
छोटू पूरे दिन टीवी देखता रहता था. हर समय वह टीवी के कार्यक्रमों में खोया रहता था.
छोटू को केवल मारधाड़ वाली फिल्में और शोरगुल वाले गीत पसंद आते.
इस तरह के कार्यक्रम देखदेख कर छोटू चिड़चिड़ा हो गया था.
छोटू के मम्मीडैडी उसे समझाते, पर उस पर कोई असर न होता

एक दिन छोटू के मम्मीडैडी बाहर गए थे. छुट्टी का दिन था. छोटू घर में अकेला था.
हमेशा की तरह छोटू ने टीवी के बटन घुमाने शुरू किए, पर टीवी में कुछ आया नहीं.
आज टीवी को क्या हो गया है. लाइट भी तो आ रही है.
लगता है टीवी खराब हो गया.
अचानक टीवी स्क्रीन पर एक चेहरा आया, वह बोलने लगा -
छोटू, मैं टीवी हूं. आज मैं तुम से कुछ कहना चाहता हूं.
पहले तो छोटू घबरा गया. फिर हिम्मत जुटा कर बोला -
तुम तो टीवी हो. तुम रोज बोलते हो, फिर इस में नई बात क्या है?

हां, आज तुम्हारी आवाज जरूर अलग लग रही है. बोलो, क्या कहना चाहते हो?
तुम ही नहीं छोटू, देश के लाखोंकरोड़ों बच्चे घंटों टीवी से चिपके रहते हैं. इसलिए मैं कुछ कहना चाहता हूं.
हाथ में रिमोट आते ही तुम चैनल बदलते रहते हो. मैं झटके खाता रहता हूं.
खामोश रह कर मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करता हूं. और बदनाम भी मैं ही होता जाता हूं.
कुछ लोग बिना जानेबूझे हमें 'इडियट बाक्स' भी कहते है. मगर हम मूर्ख नहीं हैं.

मूर्ख तो वे हैं, जो चौबीसों घंटे शोरगुल वाले गीत और मारधाड़ वाली फिल्में देखते रहते हैं. या फिर अंधविश्वास वाली सीरियल्स देखते रहते हैं.
फिर हम क्या देखें, टीवी भैया?
ऐतिहासिक, भौगोलिक सीरियल्स, विज्ञान कथाएं, महान व्यक्तियों की कहानियां, या सामान्य ज्ञान बढ़ाने वाले कार्यक्रम देखने चाहिए.
यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो सभी तुम्हारे टीवी को 'इडियट बाक्स' कहेंगे. क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा?
बिलकुल नहीं टीवी भैया. मैं वादा करता हूं आज से मैं वही कार्यक्रम देखूंगा, जो जानकारी बढ़ाने वाली हो.
शाबाश.

जैसी करनी वैसी भरनी

कविता

(1)

किस कारण से मानव जग में निर्धन तो नरक पाता है।
धन के पीछे भाग रहा, फिर भी धन नहीं पाता है ।
काम भी करता पूरा-पूरा, पर कुछ हाथ न आता है।
धन की तृष्णा में रहता है, तड़प-तड़प मर जाता है।।
दानी को दान के करने से, जो पापी मनुष्य हटाता है।
चोरी करता है हंस-हंस के और धर्म से नजर चुराता है।
जीवन भर कष्ट उठाता है, मरकर दुर्गति में जाता है।

(2)

सब चीजें घर में हों पर उपभोग् नहीं कर सकता है
ना खाता है पीता है, बस रोग में पड़ा तड़पता है।
प्रभु बतलायें ऐसी हालत इस जीव की क्यों हो जाती है
जब हो घर में सामग्री फिर काम क्यों नहीं आती है।।

साधु मुनियों की सेवा में , जो कोई प्राणी जाता है,
आहार आदि से मुनियों की सेवा का लाभ उठाता है ।
देकर दान किन्तु वह यदि फिर पीछे से पछताता है,
अगले जन्म में धन मिलता, पर भोगने न पाता है।

(3)

अंग अंग में जलन का रोग रहे दिन-रात।
फल है यह किस पाप का बोलो दीनानाथ।।
पक्षियों और पशुओं से भूखे प्यासे तड़पाता है।
लेता है काम उनसे ज्यादा और तरस जरा नहीं खाता है।।

कविताएँ

मम्मी मेरा जन्म दिवस है,
केक मिठाई लाओ ना ।
नये-नये कपडे दिलवा दो,
सबको घर पर बुलाओ ना ।
चुन्नू तेरा जन्म दिवस है,
पहले तू मंदिर जाना ।
प्रतिमा का अभिषेक तू करना,
मुनिवर की भक्ति गाना ।
बड़े जनों के चरण को छूना,
घर का बना केक खाना ।
जन्म मरण का अंत करे तू,
फिर न लौट न भव में आना ।

शहद अरे क्यों खाते हो,
कितना पाप कमाते हो।
यह मक्खी का थूक है,
तुमको लगता जूस है।
अग्नि में वे जल जातीं,
कितनी मक्खी मर जातीं।
मत खाना मानो तुम सीख,
ताली बजाओ हो गई जीत।

–विराग शास्त्री

कहाँ गए वे लोग

पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री उन दिनों कांग्रेस के महासचिव थे। एक दिन एक निर्धन विद्यार्थी उनके पास आया और अपना दाखिला भेजने के लिए कुछ रूपयों की माग की। शास्त्री जी दुविधा में पड़ गए क्योंकि रूपए उनके पास थे नहीं और विद्यार्थी के भविष्य को ध्यान में रखकर इंकार वह करना नहीं चाहते थे। कुछ सोचकर उन्होंने विद्यार्थी से कहा – तुम कल आना।

दफ्तर से घर पहुंचकर शास्त्रीजी ने इस बात की चर्चा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता शास्त्री से की। ललिताजी ने विद्यार्थी के दाखिले लायक रूपये शास्त्री जी को दे दिए। रूपए मिलने पर शास्त्रीजी को बड़ा विस्मय हुआ और ललिता जी से उन्होंने पूछा– इतने रूपए तुम्हारे पास कहां से आये। ललिता जी ने सहज भाव से उत्तर दिया – जो वेतन आपको मिलता है उसी में से पांच रूपए महीना मैं बचा लेती हूँ।

शास्त्री जी तुरन्त ऑफिस गए और अपना वेतन पांच रूपए महीना कम कर दिया।

आज जब देश के नेताओं पर दृष्टि दौड़ाते हैं तो लगता है कहां गये वे लोग ?

नीतिवाक्य

- न्याय से कमाओ, विवेक से खर्च करो, संतोष से रहो ।
- जीवन भर प्रवचनों में मत बैठो, प्रवचनों को जीवन में बिठाओ। अपने अच्छे परिणाम ही अपने परममित्र है। अपने बुरे परिणाम अपने शत्रु हैं ।

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

1. भगवान महावीर का शासन कब तक चलेगा ?

उत्तर पंचमकाल के अंतिम समय तक। – मोनिल जैन, सराहनपुर

2. तीर्थंकर के जन्म अभिषेक के समय पांडुक शिला पर देव कितने समय में पहुँच जाते हैं ? – ऋद्धि जैन, मेरठ

उत्तर देवों को विक्रिया ऋद्धि होती है इसलिये विचार आते ही वे पांडुक शिला पर पहुँच जाते हैं।

3. जब मनुष्य यह जानता है कि सब छोड़कर जाना पड़ेगा तो पाप क्यों करता है ? – वैष्णवी जैन, सिहोर

उत्तर उसे पाप के फल में मिलने वाले दुःखों को सुना है परंतु उसे इसका थोड़ा भी विश्वास नहीं है।

4. समवशरण की रचना कौन करता है ? – मंगेश शाह, अहमदाबाद

उत्तर समवशरण की रचना इन्द्र की आज्ञा से कुबेर करता है।

5. सम्यक् दर्शन कम से कम किस आयु में हो सकता है ? – अजय जैन, दिल्ली

उत्तर आठ वर्ष की आयु में ।

निर्ग्रन्थों की नगरी

निग्रन्थों के देश में तुमको लेकर जायेगें
निग्रन्थों की नगरी का तुम्हें मार्ग दिखायेंगे ॥
आए तुम परदेश में, मत रूक जाना यहां।
सिद्धों की श्रेणी में, तेरा नाम है लिखा।
कर्मों के बादल सभी, यू हीं छट जायेंगे....... निर्ग्रन्थों की नगरी
संयम की सरिता बहती, मुनियों की वेश में
चैतन्य वाटिका लहराती, निज आत्म प्रदेश में
चेतनता की गंध से, सबको महकायेंगे....... निर्ग्रन्थों की नगरी
राग और द्वेष के प्रति,सो जा मेरे लाडले
मत सोना हे पुत्र तुम, अपने कर्तव्य से
बनने आए भगवान तुम, हम तुम्हें जागाएंगे...... निर्ग्रन्थों की नगरी
सम्यकदर्शन का पालना, घुंघरू हैं ज्ञान के
चारित्र की डोरी लगी, सयंम बल से खींच के
छठे और सप्तम में, अब तुम्हें झुलायेंगे....... निर्ग्रन्थों की नगरी
ज्ञान चक्षु से देखना, इस जग के जीवों को
निज सम जीव ही जानना, तुम सब जीवों को
समवशरण के राजा तुमको, प्रभु बुलायेंगे........ निर्ग्रन्थों की नगरी
सिद्ध वहां के महाराजा हैं, अरिहन्तों का राज
माँ जिनवाणी कह रहीं, तुम बन जाओ मुनिराज
चलना उनके कदमों पर, वहीं तुम्हें चलायेंगे....... निर्ग्रन्थों की नगरी ॥

- विकास जैन, शहादरा, दिल्ली

लिपिस्टिक, काजल, टूथपेस्ट में हेयर डाई में जहर

क्या आप जानते हैं कि आप जो लिपिस्टिक, काजल और टूथेपस्ट प्रतिदिन प्रयोग करते हैं वह आपके जीवन को खतरे में डाल सकता है। हो सकता है उसमें जहर हो। दिनांक 29 अप्रेल को जी न्यूज पर प्रसारित समाचार के अनुसार इन सभी वस्तुओं में अधिक असर और फायदे के लिये कंपनियाँ सरकारी नियमों का उल्लंघन कर रही हैं।

दिल्ली फार्मास्युटिकल रिसर्च सेन्टर की रिपोर्ट के अनुसार लिपिस्टिक और काजल में सीसे की मिलावट की जा रही है। टूथपेस्ट में निकोटिन मिलाया जा रहा है। हेयर डाई में जहरीला रसायन मिलाया जा रहा है।

सरकारी नियमों के अनुसार लिपिस्टिक और काजल में 20 पी पी एम केमिकल रसायन मिलाया जा सकता है। लेकिन लिपिस्टिक में 29.006 सी सी एम और काजल में 28.66 सी सी एम, शैम्पू में खतरनाक आर्सेनिक मिलाया जा रहा है। आर्सेनिक जहर के समान है। ये मिलावट अपने उत्पाद को ज्यादा प्रभावशाली और बिक्री बढ़ाने के लिये की जा रही है। हेयर डाई में खतरनाक रसायन पाये गये हैं जो शरीर को अधिक नुकसान पहुँचा सकते हैं। सीसे और निकोटिन के अधिक प्रयोग से कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी होने का खतरा होता है। यहाँ तक कि चेहरे पर लगाये जाने वाले पाउडर में भी अधिक रसायन पाये गये हैं।

कैसे पहचानें – डॉ. एस.एस.अग्रवाल के अनुसार यदि पाऊडर में खुरदुरापन या अधिक चिकनापन है तो उसमें केमिकल्स की मात्रा अधिक समझना चाहिये। यदि काजल लगाने में जलन का अनुभव हो तो उसमें सीसे की मात्रा अधिक समझना चाहिये। यदि टूथपेस्ट में अधिक सुंगध अथवा झाग बनता हो तो वह नकली हो सकता है।

क्या करें – जैन दर्शन के चरणानुयोग के अनुसार पेस्ट ज्यादा दिनों तक गीला रहता है, अतः वह अभक्ष्य है। पेस्ट में प्रतिसमय जीवों की उत्पत्ति होती रहती है अतः पेस्ट नहीं करना चाहिये। दांतों को स्वच्छ रखने के लिये आयुर्वेदिक मंजन का प्रयोग करना चाहिये। पेस्ट करने में सुविधा, झाग और सुंगध से अच्छा तो लगता है परंतु मंजन से ज्यादा प्रभावशाली नहीं है।

लिपिस्टिक तो वैसे ही अभक्ष्य है। सुन्दरता श्रृंगार से नहीं बल्कि गुणों से आती है। अतः इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये। यदि प्रयोग करने का बहुत मन हो तो जिन लिपिस्टिक को बिना हिंसा के बनाया गया हो वह प्रयोग करना चाहिये।

प्रयोग में आने वाली वस्तु अच्छी कंपनी और एक्सपायरी डेट और बैच नम्बर देखकर ही खरीदें। आपको सावधान करना हमारा काम है परंतु सावधान होना आपका। जागो साधर्मियो! कहीं शरीर की सुन्दरता के चक्कर में हम पाप को और बीमारियों को आमंत्रण नहीं दे रहे सोचिये..........

– विराग शास्त्री

जानो वे कौन थे ?

1. लोकप्रिय कृति छहढ़ाला के रचनाकार पं. दौलतरामजी के पिता का नाम क्या है ?
   श्री टोडरमलजी।
2. वे कौन थे जो सीताजी को रथ में बिठाकर जंगल छोड़ने गये थे ?
   सेनापति कृतांतवक्र।
3. वे कौन थे जो इस काल के अंतिम कामदेव थे ?
   श्री जम्बू स्वामी।
4. वे कौन थे जो एक मुनिश्री को जलाकर मुनि हो गये थे ?
   कपिल ब्राह्मण।
5. वे कौन थे जो मुनि निंदा के फल में मरकर बंदर बन गये थे ?
   जीवक वैद्य।
6. जो कौन थे जिन्होंने देशभूषण–कुलभूषण मुनि पर उपसर्ग किया था ?
   अग्निप्रभ देव।
7. वे कौन थे जिन्होंने अपनी आयु 1 महीने शेष जानकर मुनि दीक्षा ले ली थी ?
   महाबल राजा।
8. वे कौन थे जिन्हें अपने 60000 पुत्रों की मृत्यु का समाचार सुनकर वैराग्य हो गया था ?
   सगर चक्रवर्ती।
9. वे कौन थे जिन्हें झूठ बोलने के अपराध में तीन थाली गोबर खाने की सजा दी गई थी ?
   श्रीभूति पुरोहित।
10. वे कौन थे जो नौकरों के डांटने के प्रायश्चित्त में उस दिन भोजन नहीं करते थे ?
    बैरिस्टर चंपतरायजी।
11. वे कौन थे जिनकी 32 स्त्रियाँ थीं और उन्होंने दीक्षा ले ली थी ?
    सुकुमाल कुमार।
12. वे कौन थे जिन्होंने अपने भाई पर पत्थर की शिला पटक दी थी ?
    कमठ।

असली खबर

दुनिया का सबसे गंदा घी

आप जो घी खा रहे हैं कहीं वह नकली तो नहीं। उसमे चर्बी और अन्य गंदे पदार्थों को तो नहीं मिलाया जा रहा। 7 मई दिल्ली के पास मुरादाबाद में नकली घी बनाने वाली चार फैक्ट्रियाँ पकड़ी गई है। इन सभी फैक्ट्रियों में बुरी बदबू आ रही थी। पुलिस वाले भी अंदर जाने में बहुत समस्या महसूस कर रहे थे। उन्होंने अंदर जाकर देखा तो 4 विशाल ड्रम में हड्डियों को उबाला जा रहा था। इन हड्डियों को पिघलाकर केमिकल डालकर 2000 किलो नकली घी बनाया जा रहा था। दूसरे ड्रम में मांस और चर्बी को उबाला जा रहा था। इन फैक्ट्रियों से 20 हजार किलो तैयार नकली घी पकड़ा गया। यदुवेन्दु सिंह (एस.पी.) और एम.पी. सिंह (सिटी मजिस्ट्रेट) ने बताया कि इस नकली घी को गुजरात, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों में भेजा जाता था। नकली घी का व्यापार 1200 करोड़ रूपये फैल गया है। इसका मुख्य केन्द्र मेरठ और आगरा में है। इससे पूर्व भी कानपुर के जवाहरपुरम् में, राजस्थान के जोधपुर और जयपुर में, अहमदाबाद के शाहपुरा में, हजारों किलो नकली घी पकड़ा गया था।

पहचाने कैसे- असली घी में फैट नहीं होता, असली घी भूरे रंग का होता है और जल्दी जम जाता है। नकली घी में स्वाद नहीं सुंगध होती है।

तो ध्यान रखें। सावधानी ही बचाव है।

स्रोत - जी न्यूज, दिनांक - 08-05-2010

पानी बरसा छम छम

बादल गरजा घम-घम-घम
बरसा पानी छम-छम-छम
बिजली चमकी चम-चम-चम
लगे कांपने हम-हम-हम।
बनता कीचड़ घप घप घप
बच्चे चलते छप-छप-छप।
तुम बैठे क्यों डरते
आनन्द क्यों न करते
आनन्द करते हम हम हम
फिर क्यों डरते तुम तुम तुम

बरसा पानी आयी बाढ़
देखो कितने गिरते वृक्ष।
कितनी चींटी डूब रही है।
चिड़िया कैसे कांप रहीं हैं
मेंढ़क मरते, मरते जीव।
हम हिंसा से दूर सदैव।
हम न खेलें पानी में
शिक्षा दी थी नानी ने।

ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना

PENTING

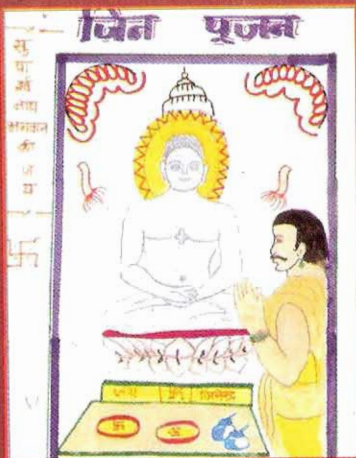

नाम – सौरभ जैन

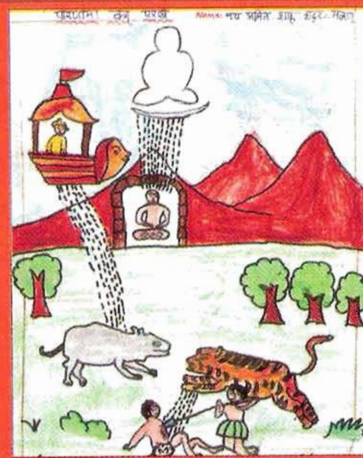

नाम – अमित शाह

आपके ब्रश से

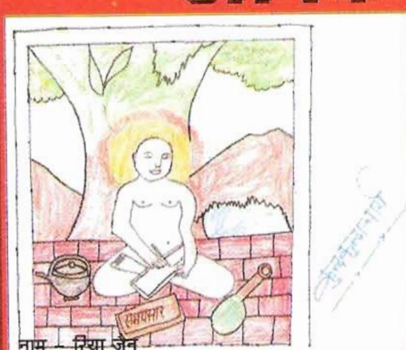

नाम – रिया जैन

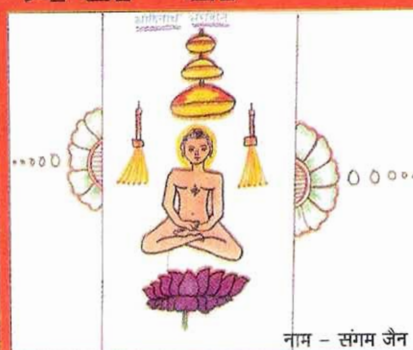

नाम – संगम जैन

नाम – अनु जैन

नाम – अमन जैन

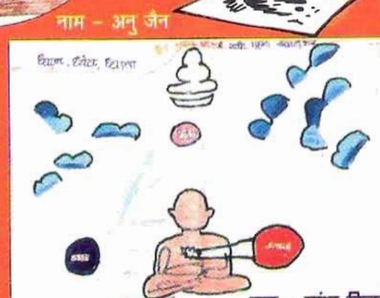

नाम – गांधा क्रिना

भाग्य
सास केतुमती क्रोध में भरी पहुंची बहू अंजना के पास और....
दुष्टा, यह तूने क्या किया? कुलकलंकिनी किसका है यह गर्भ? दूर हो जा मेरी आंखों के सामने से। निकल जा मेरे घर से
माता जी, जरा मेरी भी तो सुनो। वह मेरे महल में आये थे। प्रमाण के रूप में देखो यह अंगूठी दे गये हैं।
हूं। 22 वर्षों से तो पवन ने तेरा मुंह तक नहीं देखा और तू कहती है वह आया था ढीठ कहीं की, झूठी कहींकीजबान चलाती है। मैं एक पल भी तेरा मुंह नहीं देखना चाहती ले जा अपनी इस दासी वसततिलका को और निकल जा यहां से।
शांत हूजिये मां जी, आपकी आज्ञा है तो चली जाती हूं।
मालकिन कितनी दुष्ट है तुम्हारी सास! यह भी नहीं सोचा तेरे पेट में बच्चा है कहां जायेगी तू बेचारी।
वसततिलके ऐसा न कह। उन्होनें मुझे 22 वर्षों तक छोड़े रखा, सास ने घर से निकाल दिया, किसी का भी दोष नहीं है इसमें। मैंने अवश्य कोई पाप किया होगा, जिसका फल मुझे ही तो भुगतना पड़ेगा, और कोई भुगतने थोड़े ही आयेगा मुझे किसी के प्रति रंच भी रोष नहीं

महाराज, यह राजरानी अंजना बेचारी गर्भवती है। सास ने झूठा लांछन लगा कर इसे घर से निकाल दिया - इसके पति ने 22 वर्ष से इससे मुंह फेर रखा है। क्या अपराध किया है बेचारी ने ?
जो जो किसी पर पड़ती है वह वह सब उसके अपने किये कार्यों का ही फल होता है। जो उसे अवश्य भोगना पड़ता है। अंजना ने भी पिछले जन्म में अपनी सौत से क्रोधित होकर 22 पल के लिये जिन प्रतिमा को उसके चैत्यालय से हटा कर उसे दर्शनों से वंचित कर दिया था, उसी का यह फल है।
तो मुनीराज श्री क्या इसके दुखों का अंत भी आयेगा या नहीं ?
हां हां क्यों नहीं इसके गर्भ में जो जीव है वह इसी भव से मोक्ष जाने वाला है। और इसके पति का मिलन भी शीघ्र ही हो जायेगा। और ऐसा होना भी इसके पूर्व कर्म का ही फल है क्यों कि प्रतिमा जी को हटा-कर इसने बहुत पश्चाताप किया था और पुनः चैत्यालय में स्थापन करवा दिया था।
देखो वसंते, मैं क्या कहती थी। जो कुछ अच्छा बुरा होता है वह सब हमारे किये कर्मों का ही तो फल है। फिर क्यों किसी पर क्रोध करना, क्यों किसी पर दोषारोपण करना।
ठीक कहती हो आप। अब चलो सामने इस गुफा में चलें प्रसुति का समय निकट आ गया है।
क्रमशः